

चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ

बी० ए०

हिन्दी साहित्य पाठ्यक्रम

(वर्ष 2014–15 से प्रभावी)

प्रथम वर्ष

- 1 प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य
- 2 हिन्दी नाटक और रंगमंच

द्वितीय वर्ष

- 1 आधुनिक हिन्दी काव्य
- 2 हिन्दी कथा साहित्य

तृतीय वर्ष नोट :- बी०ए० तृतीय वर्ष का पाठ्यक्रम वर्ष 2013–2014 से प्रभावी होगा।

- 1 अद्यतन हिन्दी एवं कौरवी लोक काव्य
- 2 हिन्दी निबन्ध तथा अन्य गद्य विधाएँ

बी० ए०

प्रयोजनमूलक हिन्दी पाठ्यक्रम

(वर्ष 2014–15 से प्रभावी)

प्रथम वर्ष

- 1 भारत सरकार की राजभाषा नीति
- 2 हिन्दी का प्रायोगिक व्याकरण और वार्तालाप
- 3 प्रायोगिक कार्य

द्वितीय वर्ष

- 1 हिन्दी में कार्यालयी और वाणिज्यिक पत्राचार
- 2 टिप्पणी एवं आलेखन
- 3 प्रायोगिक कार्य

तृतीय वर्ष नोट :- बी०ए० तृतीय वर्ष का पाठ्यक्रम वर्ष 2013–2014 से प्रभावी होगा।

- 1 अनुवाद, दुभाषण्या - प्रविधि, पारिभाषिक, शब्दावली
- 2 संचार माध्यन
- 3 प्रायोगिक कार्य

चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ

बी०८० (प्रथम वर्ष) हिन्दी साहित्य पाठ्यक्रम

प्रथम प्रश्न पत्र

प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य

50 अंक

निर्धारित कवि— कबीर (30 साखी तथा 05 पद), जायसी (पदमावत का एक खण्ड), सूरदास (20 पद), तुलसीदास (20 छन्द), बिहारी (30 दोहे), घनानन्द (20 छन्द), भूषण (20 छन्द)।

द्रुत पाठ — सरहपा, अब्दुर्रहमान, चन्दवरदाई, अमीर खुसरो, मीराबाई।

कबीरदास : साखी

गुरुदेव कौ अंग :

सतगुरु की महिमा अनंत, गूँगा हूवा बावला, दीपक दीया तेल भरि,
जाका गुरु भी अंधाला, नां गुर मिल्या न सिष भया, माया दीपक नर पतंग,
सतगुरु हम सूं रीझ कर।

सुमिरण कौ अंग :

कबीर कहता जात हूं भगति भजन हरि नांव है, कबीर सूता क्या करै काहे
न देखै जागि।

बिरह कौ अंग :

चकवी बिछुटी रैणि की, बहुत दिनन की जोवती, यहु तन जारौं मसि कर्ल,
हंसि हंसि कंत न पाइए, नैनां अंतर आव तूँ. कबीर देखत दिन गया, कै
बिरहनि कूं मीच दे, कबीर तन मन यौं जल्या, बिरह भुवंगम तन बरै,
अषणियाँ झाँई पड़ी, बिरहनि ऊभी पंथ सिरि।

परचा कौ अंग :

पारब्रह्म के तेज का, अंतरि कंवल प्रकासिया, पिंजर प्रेम प्रकासिया, पांणी
ही तैं हिम भया, जब मैं था तब हरि नहीं, मानसरोवर सुभर जल, कबीर
कंवल प्रकासिया।

रस कौ अंग :

कबीर हरिरस यौं पिया, राम रसाइण प्रेम रस, कबीर भाठी कलाल की।

पद :

संतो भाई आई ज्ञान की आंधी, जतन बिनु मिरगन खेत उजारे, रहना नहीं
देश बिराना है, काहे री नलिनी तू कुम्हलानी, दुलहिनि गावहु मंगल चार।

जायसी

पदमावत का मानसरोदक खण्ड (सम्पूर्ण)

सूरदास

विनय :

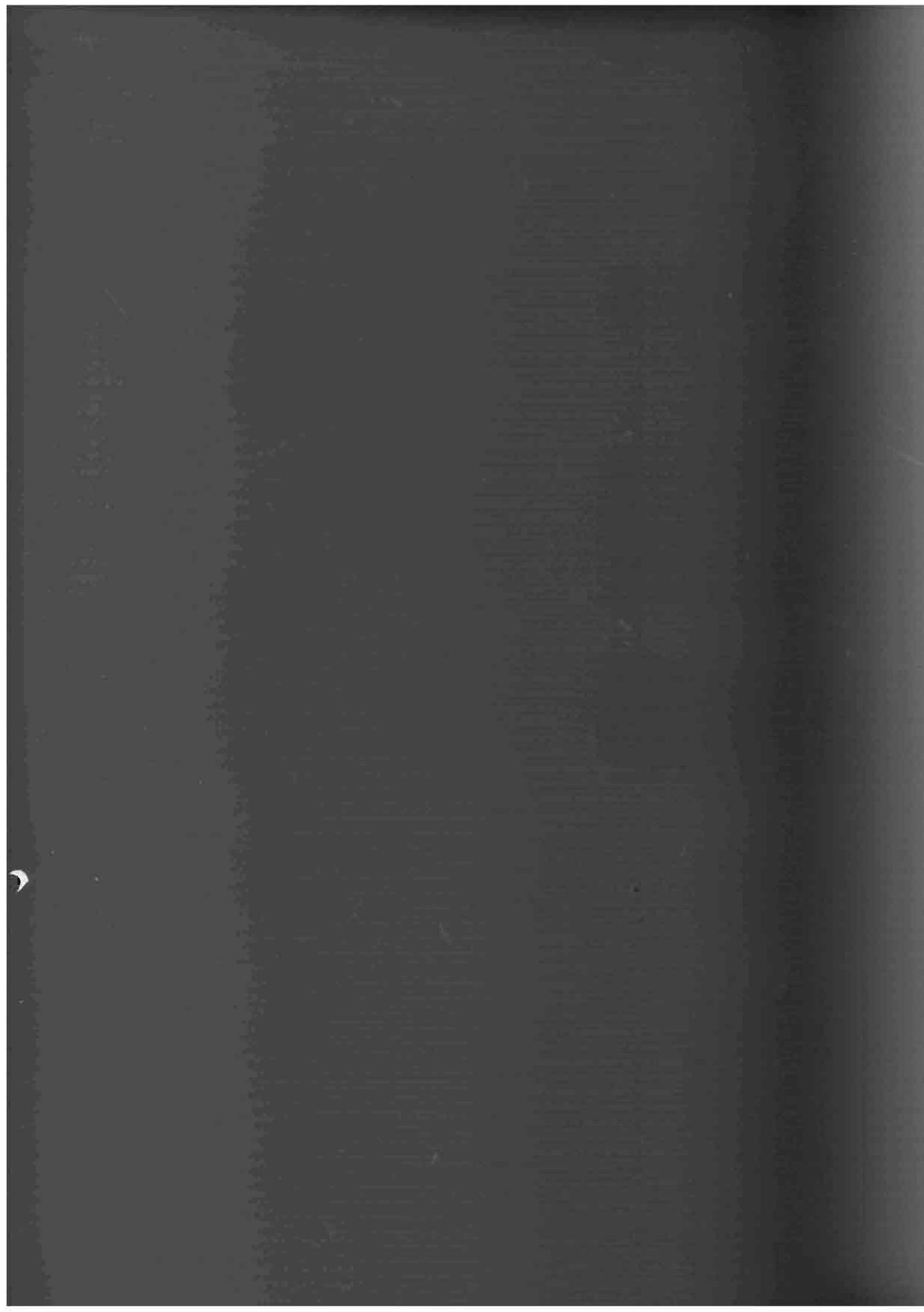
आजु हीं एक एक करि, अविगत गति कछु कहत न आयै, रै मन मूरख
जनम गवायौ, गोविन्द प्रीति सबनि की मानत, जै दिन मन पंछी उड़ि जैहैं,
अपुनपौ आपुन ही विसरयौ, प्रभु कौं देखो एक सुभाई।

वात्सल्य :

सोभित कर नवनीत लिये, खेलत मैं को काको गुसैया, देखो भाई दधिसुत
मैं दधि जात

श्रगार :

बूझत स्याम कौन तू गोरी निसिदिन दरसत नैग हमारे, अखियां हरि दरसन
की भूखी, मधुवन तुम कर्त रहस हरे, निस्गुन कौन देस को बासी, ऊँधी
अौखियां अति अनुरागी, आयो घोप बड़ी ब्लापारी, मोहन मांस्यो अपनो रूप,
ऊँधी मोहि ब्रज विसरत नाही, अति मलीन वृषभान कुमारी, लरिकाई को
ग्रन आति रैसे करके छूटत।



तुलसीदास
विन्यपत्रिका :

कवितावली :

दोहावली :

बिहारी :

घनानंद :

भूषण :-

ऐसी मूढ़ता या मन की, ऐसो को उदार जग माही,
केसव कहि न जाइ का कहिये, हे हरि कस न हरहु भ्रम भारी, हरि तुम
बहुत अनुग्रह कीन्हों, अब लौं नसानी अब न नसाइहों, माधव मोह—फौस
क्यों टूटै।

अवधेश के द्वारे सकारे गई, बर दंत की पंगति कुंद कली, कीर के कागर
ज्यों नृप चीर, रावरे दोष न पायन को, पातभरी सहरी सकल सुत, पुर ते
निकसी रघुबीर बधू, सीस जटा उर बाहु विसाल, बालधी विसाल बिकराल।
एक भरोसो एक बल, जो घन बरसे समय विर, चढत न चातक चित कबहुं,
बध्यों बधित पर्यो पुन्य जल, बरसि परुष पाहन पयद।

मेरी भवबाधा हरौ, नीकी दई अनाकनी, जमकरि मुंह तरहरि, या अनुरागी
चित्त की, मोहनि मूरति स्याम की, तजि तीरथ हरि राधिका, चिरजीवौं जोरी
जुरै, अजौ तरयौना ही रह्यौ, स्वारथ सुकृतु न श्रम वृथा, नर की अरु नल
नीर की, बढत बढत सम्पति सलिल, बसै बुराई जासु तन।

छकि रसाल सौरभ सने, तिय तिरसौंहे मन किये, ज्यों ज्यों बढत विभावरी,
जुवति जोन्ह में मिलि, जोग जुगति सिखए सबै, मंगलबिंदु सुरंग मुख,
खेलन सिखए अलि भले, रससिंगार मंजनु किये, चमचमात चंचल नयन,
अरुन बरन तरुनि चरन, दृग उरझत टूटत कुटुम, पिय के ध्यान गहि गही,
कहत सबै बैंदी दिये, मंजुन करि खंजन नयनि, औरे ओप कनीनिकनि, कर
मुंदरी की आरसी, मैं मिसहा सोयो समुझि, बतरस लालच लाल की, हेरि
हिंडोरे गगन तें।

अति सूधो सनेह को मारग है, भोर तें साँझ लौं कानन और, झलकै अति
सुंदर आनन गौर, हीन भये जल मीन अधीन, घन आनंद जीवन रूप
सुजान, इस बांट परि सुधि रावरे भूलनि, पूरन प्रेम को मंत्र महा पन, पहिले
अपनाय सुजान सनेह सों, घनआनंद जीवन मूल सुजान की, आसा—गुन
बांधि कै भरोसो सिल धरि छाती, कंत रमै उर अंतर मैं, मरिबो विसराम गनै
वह तो, कारी कूर कोकिला कहाँ को बैर, ऐरे बीर पौन तेरा सबै ओर गौन,
बैरी वियोग की हूकन जारत, पर काजहि देह को धारि फिरो, एकै
आस एकै विसवास प्रान गहे ब्रास, रावरे रूपकी रीति अनुप, चोप चाह
चावनि चकोर भयो चाहत ही।

शिवा बावनी 25 पद

साजि चतुरंग बीरे रंग में तुरंग चढ़ि, बाने फहराने घहराने घंटा गजन के,
बदल न होंहि दल दच्छिन घमंड माहिं, बाजि गजराज सिवराज सैन साजत
ही, ऊँचे घोर मंदर के अंदर रहनवारी, उतरि पलंग ते न दियो है धरा पै
पग, अंदर ते निकसी न मंदर को देख्यो द्वार, सोंधे को अधार किसमिस
जिनको अहार, राठि रिरताज और सिपाहिन में पातसाह, किवले की लौर
बाप बादसाह साहजहों, हाथ तसवीह लिए प्राप्त उठै बन्दरी को, कैयक
हजार जहों गुर्जबरदार ढाढ़े, सबन के ऊपर ही ठाड़ो रहिवे के जोग, राना
नो यमेली और बैना सब राजा भये, कूरम कमलकमाधुज हैं कदम फूल,

देवल गिरावते फिरावते निसान अली, साँच को न मानै देवी देवता न जानै
अरु, कुभकन्न असुर औतारी अवरंगजेब, छूटत कमान और तीर गोली
बानन के, उतै पातसाह जू के गजन के ठह छूटे, जीत्यो सिवराज सलहेरि
को समर सुनि।

प्रथम प्रश्न— (क) अनिवार्य दस वर्तुनिष्ठ/अतिलघूतरी प्रश्न।

(प्रश्न पत्र के सम्पूर्ण पाठ्यक्रम से)	$(10 \times 1 = 10)$
(ख) अनिवार्य पाँच लघूतरी प्रश्न। (प्रश्न पत्र के द्वुत पाठ के पाठ्यक्रम से)	$(5 \times 2 = 10)$
इकाई-1. कबीरदास, जायसी, सूरदास, तुलसीदास के निर्धारित काव्यांशों से सम्बन्धित व्याख्या।	$(2 \times 4 = 8)$
इकाई-2. विहारी, भूषण, घनानंद के निर्धारित काव्यांशों से सम्बन्धित व्याख्या।	$(2 \times 4 = 8)$
इकाई-3. कबीर, जायसी, सूरदास, तुलसीदास पर आधारित आलोचनात्मक प्रश्न।	$(7 \times 1 = 7)$
इकाई-4. विहारी, भूषण, घनानन्द पर आधारित आलोचनात्मक प्रश्न।	$(7 \times 1 = 7)$

सन्दर्भ/सहायक पुस्तकों – प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य

- 1— कबीर एक अनुशीलन
- 2— कबीर की विचारधारा
- 3— कबीर व्यक्तित्व एवं कृतित्व
- 4— कबीर साहित्य की परख
- 5— कबीर
- 6— कबीर
- 7— कबीर की भाषा
- 8— सूर साहित्य
- 9— सूरदास और उनका साहित्य
- 10— सूरदास और उनका काव्य
- 11— सूर की काव्य साधना
- 12— सूर की काव्य कला
- 13— सूर सौरभ
- 14— महाकवि सूरदास
- 15— त्रिवेणी
- 16— गोस्वामी तुलसीदास
- 17— तुलसी मानस रत्नाकर
- 18— तुलसीदास और उनका काव्य
- 19— तुलसी दर्शन
- 20— तुलसी रसायन
- 21— तुलसी
- 22— जायसी का पदमावत : काव्य तथा दर्शन
- 23— जायसी के पदमावत का मूल्यांकन
- 24— जायसी का काव्य— सरोजनी पाण्डेय— हिमालय पाकेट युक्त, दिल्ली
- 25— हमारे कवि
- 26— विहारी की वार्षिकूति
- 27— विहारी और उनका साहित्य
- डॉ० रामकुमार वर्मा
- डॉ० त्रिगुणायत—साहित्य निकेतन कानपुर
- चंद्रमोहन सिंह, ज्ञान लोक इलाहाबाद
- आचार्य परशुराम चतुर्वेदी—भारती भण्डार, इलाहाबाद
- हजारी प्रसाद द्विवेदी राजकमल, दिल्ली
- विजयेन्द्र रनातक— राधा कृष्ण, दिल्ली
- माताबदल जायसवाल—विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी
- हजारी प्रसाद द्विवेदी— विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी
- हरवंश लाल शर्मा— भारत प्रकाश मंदिर अलीगढ़
- गोवर्धन लाल शुक्ल— ब्रज साहित्य मंडल, मथुरा
- गोविन्द राम शर्मा— नैशनल पब्लिशिंग हाउस नई दिल्ली
- मनमोहन गौतम— एस चंद एण्ड संस दिल्ली
- मुंशी राम शर्मा— ग्रन्थम, कानपुर
- जय किशन प्रसाद खण्डेलवाल रवीन्द्र प्रकाशन, आगरा
- रामचन्द्र शुक्ल— नागरी प्रचारिणी सर्भा काशी
- रामचन्द्र शुक्ल— नागरी प्रचारिणी सभा, काशी
- भार्यवती सिंह— सरस्वती पुस्तक सदन भाता कटरा आगरा
- रामनरेश त्रिपाठी— राजपाल एण्ड संस दिल्ली
- बलदेव प्रसाद मिश्र हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग
- भगीरथ मिश्र— साहित्य भवन इलाहाबाद
- उदयभानु सिंह— राधा कृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
- जगदीश प्रसाद श्रीवर्तव, स्मृति प्रकाशन, इलाहाबाद

- 28— कवित्रयी— (विहारी, देव, घनानंद) — गिरीश चन्द्र तिवारी पुस्तक प्रचार, दिल्ली
29— विहारी और घनानंद — परमलाल गुप्त
30— विहारी का काव्य : आनन्द मंगल —

काव्य शास्त्र—

- 01— अलंकार पारिजात : नरोत्तम स्वामी— लक्ष्मी नारायण अग्रवाल प्रकाशन आगरा
02— नूतन काव्य प्रकाश— डॉ उपेन्द्र त्रिपाठी— साहित्य रत्नालय, कानपुर
03— काव्य कौमुदी— डॉ बालकृष्ण गुप्त, साहित्य निकेतन कानपुर
04— अलंकार, रस, छन्द, परिचय— भारत भूषण त्यागी, लायल बुक डिपो, ग्वालियर
05— काव्य लोक गोपीनाथ शर्मा, किताब महल, इलाहाबाद
06— काव्य के रूप— गुलाब राय— आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली

**बी०ए० (प्रथम वर्ष) हिन्दी साहित्य पाठ्यक्रम
द्वितीय प्रश्न पत्र
हिन्दी नाटक और रंगमंच**

50 अंक

निर्धारित पाठ्यक्रम – (क) नाटक—ध्रुवस्वामिनी—जयशक्ति प्रसाद, आधे—अधूरे — मोहन राकेश

(ख) एकांकी — औरंगजेब की आखिरी रात (डॉ० राम कुमार वर्मा), स्ट्राइक (भुवनेश्वर) भोर का तारा (जगदीश चन्द्र माथुर), नये मेहमान (उदयशक्ति भट्ट), सूर्यी डाली (उपेन्द्र नाथ 'अश्क')

द्रुत पाठ – (क) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, हरिकृष्ण प्रेमी, लक्ष्मीनारायण मिश्र, धर्मवीर भारती।

(ख) हिन्दी रंगमंच का सामान्य परिचय

प्रथम प्रश्न

(क) अनिवार्य दस वस्तुनिष्ठ / अतिलघूतरीय प्रश्न। (प्रश्न पत्र के सम्पूर्ण पाठ्यक्रम से)	$(10 \times 1 = 10)$
(ख) अनिवार्य पाँच लघूतरीय प्रश्न। (प्रश्न पत्र के द्रुत पाठ के पाठ्यक्रम से)	$(5 \times 2 = 10)$
इकाई-1. नाटकों पर निर्धारित व्याख्याएँ।	$(2 \times 4 = 8)$
इकाई-2. एकांकियों पर निर्धारित व्याख्याएँ।	$(2 \times 4 = 8)$
इकाई-3. ध्रुवस्वामिनी एवं आधे—अधूरे से निर्धारित आलोचनात्मक प्रश्न।	$(7 \times 1 = 7)$
इकाई-4. निर्धारित एकांकियों एवं एकांकिकारों से सम्बन्धित आलोचनात्मक प्रश्न	$(7 \times 1 = 7)$

सन्दर्भ/सहायक पुस्तकें – हिन्दी नाटक और रंगमंच

- | | |
|--|---|
| 01– हिन्दी नाटक : इतिहास के सोपान | – गोविन्द चातक, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली |
| 02– हिन्दी नाटक : आजकल | – जयदेव तनेजा, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली |
| 03– आधुनिक हिन्दी नाटक और रंगमंच | – लक्ष्मी नारायण लाल, साहित्य भवन, इलाहाबाद |
| 04– हिन्दी नाटक | – बच्चन सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली |
| 05– आधुनिक हिन्दी नाट्यकारों के सिद्धान्त | – निर्मला हेमन्त, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली |
| 06– प्रसाद के नाटक : सृजनात्मक धरातल और रंगमंच | भाषिक घेतना – गोविन्द चातक, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली |
| 07– नाटककार जगदीश चन्द्र माथुर | – गोविन्द चातक, राधा कृष्ण प्रकाशन, दिल्ली |
| 08– हिन्दी एकांकी की शिल्प विधि का विकास | – सिद्धनाथ कुमार |
| 09– प्रतिनिधि जयशंकर प्रसाद | – (सं०) सत्येन्द्र तनेजा, राधा कृष्ण प्रकाशन, दिल्ली |
| 10– हिन्दी एकांकी का रंगमंचीय अनुशीलन | – भुवनेश्वर महतो, अनन्पूर्णा प्रकाशन, कानपुर |
| 11– हिन्दी नाटक : मिथक एवं यथार्थ | – रमेश गौतम |
| 12– एकांकी और एकांकिकार | – रामचरण महेन्द्र |
| 13– हिन्दी नाटक | – दशरथ ओझा |
| 14– ध्रुवस्वामिनी | – वरतु एवं शिल्प – सुरेश नारायण |
| 15– प्रसाद की नाट्यकला | – सुजाता विष्ट |

चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ

बी०६० (प्रथम वर्ष) हिन्दी साहित्य पाठ्यक्रम

प्रथम प्रश्न पत्र

प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य

50 अंक

निर्धारित कवि— कबीर (30 साखी तथा 05 पद), जायसी (पदमावत का एक खण्ड), सूरदास (20 पद), तुलसीदास (20 छन्द), बिहारी (30 दोहे), घनानन्द (20 छन्द), भूषण (20 छन्द)।

द्रुत पाठ — सरहपा,

चन्द्रवरदाई,

रस ५५ लेखनकाल

कबीरदास : साखी

गुरुदेव कौ अंग :

सतगुरु की महिमा अनंत, गूँगा हूवा बावला, दीपक दीया तेल भरि,
जाका गुरु भी अंधाला, नां गुरु मिल्या न सिष भया, माया दीपक नर पतंग,
सतगुरु हम सूं रीझ कर।

सुमिरण कौ अंग :

कबीर कहता जात हूं भगति भजन हरि नाव है, कबीर सूता क्या करै काहे
न देखै जागि।

बिरह कौ अंग :

चकवी बिछुटी रैणि की, बहुत दिन की जोवती, यहु तन जारौं मसि कर्लं,
हंसि हंसि कंत न पाइए, नैनां अंतर आव तूं कबीर देखत दिन गया, कै
बिरहनि कूं मींच दे, कबीर तन मन यौं जल्या, बिरह भुवंगम तन बसै,
अषणियाँ झाँई पड़ी, बिरहनि ऊभी पंथ सिरि।

परचा कौ अंग :

पारब्रह्म के तेज का, अंतरि कंदल प्रकासिया, पिंजर प्रेम प्रकासिया, पांणी
ही तैं हिम भया, जब मैं था तब हरि नहीं, मानसरोवर सुभर जल, कबीर
कंदल प्रकासिया।

रस कौ अंग :

कबीर हरिरस यौं पिया, राम रसाइण प्रेम रस, कबीर भाठी कलाल की।
संतो भाई आई ज्ञान की अंधी, जतन बिनु मिरगन खेत उजारे, रहना नहीं
देश बिराना है, काहे री नलिनी तू कुम्हलानी, दुलहिनि गावहु मंगल चार।

जायसी

पदमावत का मानसरोदक खण्ड (सम्पूर्ण)

सूरदास

विनय :

आजु हौं एक एक करि, अविगत गति कछु कहत न आवे, ऐ मन मूरख
जनम गंवायौ, गोविन्द प्रीति सबनि की मानत, जा दिन मन पंछी उड़ि जैहैं,
अपुनपौ आपुन ही बिसरयौ, प्रभु कौ देखौ एक सुभाई।

दात्सत्यः

सोभित कर नवनीत लिये, खेलत मैं को काको गुसैया, देखो भाई दधिसुत
मैं दधि जात

श्रंगार :

बूझत स्याम कौन तू गोरी, निसिदिन बरसत नैन हमारे, अंखियाँ हरि दरसन
की भूखी, मधुवन तुम कत रहत हरे, निरगुन कौन देस को बासी, ऊधौ
अंखियाँ अति अनुरागी, आयो घोष बड़ो व्यापारी, मोहन मांगयो अपनो रूप,
ऊधौ मोहि ब्रज बिसरत नाही, अति मलीन वृषभान कुमारी, लरिकाई को
प्रेम आलि कैसे करके छूटत।

10.08.1980
R.S.
F. No. 29/619
Date: 29/6/1980
Signature: [Signature]

दुलसीदास
दिनदर्घनिका :

कवितावली :

दोहावली :

दिहारी :

घनानिंद :

भृष्णु :-

ऐसी मूढ़ता या मन की, ऐसो को उदार जग माही,
केसव कहि न जाइ का कहिये, हे हरि कस न हरहु भ्रम भारी, हरि तुम
बहुत अनुग्रह कीन्हों, अब लौ नसानी अब. न नसइहाँ, माधव मोह-फाँसि
क्याँ दूरै।

अवधेश के द्वारे सकारे गई, बर दंत की पंगति कुद कली, कीर के कागर ज्यों नृप चीर, रावरे दोष न पायन को, पातभरी सहरी सकल सुत, पुर तेनिकसी रघुबीर बधू सीस जटा उर बाहु विसाल, बालधी विसाल बिकराल। एक भरोसों एक बल, जो धन बरसे समय चिर, चढत न चातक चित कबहुं बध्यों बधित परयो पुन्य जल, बरसि परुष पाहन पयद।

मेरी भवबाधा हरौ, नीकी दई अनाकनी, जमकरि मुहं तरहरि, या अनुरागी
चित्त की, मोहनि मूरति स्याम की, तजि तीरथ हरि राधिका, घिरजीवौं जोरी
जुरै, अजौ तरयौना ही रहयी, स्वारथ सुकृतु न अम वृथा, नर की अरु नल
नीर की, बढ़त बढ़त सम्पत्ति स्तिल, बसे बुराईं जासु तन।

छकि रसाल सौरभ सने, तिय तिरसौंहे मन किये, ज्यों ज्यों बदत विभावरी, जुवति जोन्ह में मिलि, जोग झुणति सिखए सबै, मंगलबिंदु सुरंग मुख, खेलन सिखए अलि भले, रससिंगार मंजनु किये, चमचमात चंचल नयन, अरुन बरन तरुनि चरन, दृग उरझत टूटत कुटुम, पिय के ध्यान गहि गही, कहत सबै बैंदी दिये, मंजुन करि खंजन नयनि, औरे ओप कनीनिकनि, कर मुंदरी की आसी, मैं मिसहा सोयो समुझि, बतरस लालच लाल की, हेरि हिंडोरे यगन तैं।

अति सूधो सनेह को मारग है, भोर तें सौँझ लौं कानन ओर, झलकै अति सुंदर आनन गौर, हीन भये जल मीन अधीन, घन आनंद जीवन रूप सुजान, इस बांट परी सुधि रावरे भूलनि, पूरन प्रेम को भ्रंत महा पन, पहिले अपनाय सुजान सनेह सों, घनआनंद जीवन मूल सुजान की, आसा—गुन बांधि कै भरोसो सिल धरि छाती, कंत रमै उर अंतर मैं, मरिदो विसराम गनै वह तो, कारी कूर कोकिला कहाँ को बैर, ऐरे बीर पौन तेश सबै ओर गौन, बैरी विद्योग की हूकन जारत, पर काजहि देह को धारि फिरी, एकै आस एकै विसवास प्रान गहे बास, रावरे रूपकी रीति अनूप, घोप चाह चावनि चकोर भयौ चाहत ही।

शिवा बाबनी 25 पद

साजि चतुरंग बीर रंग में तुरंग चढ़ि, बाने फहराने घंटा गजन के,
बदल न होहिं दल दच्छिन घमंड माहिं, बाजि गजराज सिवराज सैन साजत
ही, ऊँचे धोर मंदर के अंदर रहनवारी, उतरि पलंग ते न दियो है धरा पै
पग, अंदर ते निकसी न मंदर को देखो द्वार, सोंधे को अधार किसमिस
जिनको अहार, साहि सिरताज और सिपाहिन में पातसाह, किबले की ठौर
बाप बादसाह साहजहाँ, हाथ तसबीह लिए प्राप्त उठै बन्दगी को, कैयक
हजार जहाँ गुर्जबरदार ठाड़े, सबन के ऊपर ही ठाड़ो रहिबे के जोंग, राना
भो चमेली और बेला सब राजा भये, कूरम कमलकम्बुज है कदम फूल,

गा पनला आर बला तब राजा भव, कूरन कमलकमधुज ह कदम फूल,
Yashme / आर बला / भव, कूरन कमलकमधुज ह कदम फूल,
19/11/2019

देवल गिरावते फिरावते निसान अली, सौंच को न मानै देवी देवता न जानै
अठ, कुमकल असुर औतारी अवरंगजेब, छूटत कमान और तीर गोली
बानन के, उत्तै पातसाह जू के गजन के ठड़ छूटे, जीत्यो सिवराज सलहेरि
को समर सुनि।

प्रथम प्रश्न- (क) अनिवार्य दस वस्तुनिष्ठ / अतिलघूतरी प्रश्न।

(प्रश्न पत्र के सम्पूर्ण पाठ्यक्रम से)

(10 x 1 = 10)

(ख) अनिवार्य पौच लघूतरी प्रश्न। (प्रश्न पत्र के द्वुत पाठ के पाठ्यक्रम से)

(4 x 2 = 10)

इकाई-1. कबीरदास, जायसी, सूरदास, तुलसीदास के निर्धारित काव्यांशों से सम्बन्धित व्याख्या। (2 x 4 = 8)

(2 x 4 = 8)

इकाई-2. बिहारी, भूषण, घनानन्द के निर्धारित काव्यांशों से सम्बन्धित व्याख्या। (2 x 4 = 8)

इकाई-3. कबीर, जायसी, सूरदास, तुलसीदास पर आधारित आलोचनात्मक प्रश्न। (7 x 1 = 7)

इकाई-4. बिहारी, भूषण, घनानन्द पर आधारित आलोचनात्मक प्रश्न। (7 x 1 = 7)

सन्दर्भ / सहायक पुस्तकों - ग्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य

- 1- कबीर एक अनुशीलन
- 2- कबीर की विद्यारथारा
- 3- कबीर व्यक्तित्व एवं कृतित्व
- 4- कबीर साहित्य की परख
- 5- कबीर
- 6- कबीर
- 7- कबीर की भाषा
- 8- सूर साहित्य
- 9- सूरदास और उनका साहित्य
- 10- सूरदास और उनका काव्य
- 11- सूर की काव्य साधना
- 12- सूर की काव्य कला
- 13- सूर सौरभ
- 14- महाकवि सूरदास
- 15- त्रिवेणी
- 16- गोरखामी तुलसीदास
- 17- तुलसी मानस रत्नाकर
- 18- तुलसीदास और उनका काव्य
- 19- तुलसी दर्शन
- 20- तुलसी रसायन
- 21- तुलसी
- 22- जायसी का पदमावत : काव्य तथा दर्शन-
- 23- जायसी के पदमावत का मूल्यांकन
- 24- जायसी का काव्य- सरोजनी पाण्डेय-
- 25- हमारे कवि
- 26- बिहारी की वागिभूति
- 27- बिहारी और उनका साहित्य

- डॉ० रामकुमार वर्मा
- डॉ० त्रिगुणायत-साहित्य निकेतन कानपुर
- चंद्रमोहन सिंह, ज्ञान लोक इलाहाबाद
- आचार्य परशुराम चतुर्वेदी- भारती भण्डार, इलाहाबाद
- हजारी प्रसाद द्विवेदी राजकम्ल, दिल्ली
- विजयेन्द्र स्नातक- राधा कृष्ण, दिल्ली
- माताबदल जायसवाल-विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी
- हजारी प्रसाद द्विवेदी- विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी
- हरबंश लाल शर्मा- भारत प्रकाश मंदिर अलीगढ़
- गोवर्द्धन लाल शुक्ल- ब्रज साहित्य मंडल, मथुरा
- गोविन्द राम शर्मा- नेशनल पब्लिशिंग हाउस नई दिल्ली
- मनमोहन गौतम- एस चंद एण्ड संस दिल्ली
- मुंशी राम शर्मा- ग्रन्थम, कानपुर
- जय किशन प्रसाद खण्डेलवाल रवीन्द्र प्रकाशन, आगरा
- रामचन्द्र शुक्ल- नागरी प्रचारिणी सभा काशी
- रामचन्द्र शुक्ल- नागरी प्रचारिणी सभा, काशी
- भाष्यकारी सिंह- सरस्वती पुस्तक सदन माता कट्टा आगरा
- रामनरेश त्रिपाठी- राजपाल एण्ड संस दिल्ली
- बलदेव प्रसाद मिश्र हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग
- भागीरथ मिश्र- साहित्य भवन इलाहाबाद
- उदयभानु सिंह- राधा कृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
- राजेन्द्र सिंह
- विश्वनाथ प्रसाद मिश्र
- हरबंशलाल शर्मा

- 28- कवित्रीयी— (बिहारी, देव, घनानंद) — गिरीश चन्द्र तिवारी पुस्तक प्रचार, दिल्ली
29- बिहारी और घनानंद — परमलाल गुप्त
30- बिहारी का काव्य : आनन्द मंगल —

काव्य शास्त्र—

- 01- अलंकार पारिजात : नरेत्तम स्वामी— लक्ष्मी नारायण अग्रवाल प्रकाशन आगरा
02- नूतन काव्य प्रकाश— डॉ० उपेन्द्र त्रिपाठी— साहित्य रत्नालय, कानपुर
03- काव्य कौमुदी— डॉ० बालकृष्ण गुप्त, साहित्य निकेतन कानपुर
04- अलंकार, रस, छन्द, परिचय— भारत भूषण त्यागी, लायल बुक डिपो, ग्वालियर
05- काव्य लोक गोपीनाथ शर्मा, किताब महल, इलाहाबाद
06- काव्य के रूप— गुलाब राय— आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली

बी०६० (प्रथम वर्ष) हिन्दी साहित्य पाठ्यक्रम

द्वितीय प्रश्न पत्र हिन्दी नाटक और रंगमंच

50 अंक

निर्धारित पाठ्यक्रम - (क) नाटक-धुवस्वामिनी-जयशकं प्रसाद, आधे-अधूरे - मोहन राकेश

(ख) एकांकी - आरंगजेब की अस्थिरी रात (डॉ राम कुमार वर्मा), स्ट्राइक (भुवनेश्वर) भार का तारा (जगदीश चन्द्र माथुर), नर्य मेहमान (उदयशकं भट्ट), सूखी डाली (उपेन्द्र नाथ 'अश्क')

द्वितीय पाठ - (क) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, हरिकृष्ण प्रेमी, लक्ष्मीनारायण मिश्र, धर्मवीर भारती।

(ख) हिन्दी रंगमंच का सामान्य परिचय

प्रथम प्रश्न

(क) अनिवार्य दस वस्तुनिष्ठ/अतिलघूतरीय प्रश्न। (प्रश्न पत्र के सम्पूर्ण पाठ्यक्रम से) $(10 \times 1 = 10)$

(ख) अनिवार्य पाँच लघूतरीय प्रश्न। (प्रश्न पत्र के द्वितीय पाठ के पाठ्यक्रम से) $(5 \times 2 = 10)$

इकाई-1. नाटकों पर निर्धारित व्याख्याएँ। $(2 \times 4 = 8)$

इकाई-2. एकांकियों पर निर्धारित व्याख्याएँ। $(2 \times 4 = 8)$

इकाई-3. धुवस्वामिनी एवं आधे-अधूरे से निर्धारित आलोचनात्मक प्रश्न। $(7 \times 1 = 7)$

इकाई-4. निर्धारित एकांकियों एवं एकांकीकारों से सम्बन्धित आलोचनात्मक प्रश्न $(7 \times 1 = 7)$

सन्दर्भ/सहायक पुस्तकें - हिन्दी नाटक और रंगमंच

- | | |
|---|---|
| 01- हिन्दी नाटक : इतिहास के सोपान | - गोविन्द चातक, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली |
| 02- हिन्दी नाटक : आजकल | - जयदेव तनेजा, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली |
| 03- आधुनिक हिन्दी नाटक और रंगमंच | - लक्ष्मी नारायण लाल, साहित्य भवन, इलाहाबाद |
| 04- हिन्दी नाटक | - बच्चन सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली |
| 05- आधुनिक हिन्दी नाट्यकारों के सिद्धान्त | - निर्मला हेमन्त, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली |
| 06- प्रसाद के नाटक : सुजनात्मक धरातल और भाषिक चेतना | - गोविन्द चातक, राधा कृष्ण प्रकाशन, दिल्ली |
| 07- नाटककार जगदीश चंद्र माथुर | - सिद्धनाथ कुमार |
| 08- हिन्दी एकांकी की शिल्प विधि का विकास | - (स०) सत्येन्द्र तनेजा, राधा कृष्ण प्रकाशन, दिल्ली |
| 09- प्रतिनिधि जयशंकर प्रसाद | - भुवनेश्वर महतो, अन्नपूर्णा प्रकाशन, कानपुर |
| 10- हिन्दी एकांकी का रंगमंचीय अनुशीलन | - रमेश गौतम |
| 11- हिन्दी नाटक : मिथक एवं यथार्थ | - रामचरण महेन्द्र |
| 12- एकांकी और एकांकीकार | - दशरथ ओझा |
| 13- हिन्दी नाटक | - वस्तु एवं शिल्प - सुरेश नारायण |
| 14- धुवस्वामिनी | - सुजाता विष्ट |
| 15- प्रसाद की नाट्यकला | |

८३४८८

८३११
८३११